- अ नु क्र म -

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय - 'अज्ञेय' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. जीवन वृत्त
2. कृतित्व
3. साहित्यिक व्यक्तित्व
4. प्रेरणा एवं प्रभाव
5. 'अज्ञेय' के उपन्यासों का वैशिष्टय
6. उपन्यासों में जीवन दर्शन
7. जीवन दर्शन
8. 'अज्ञेय' के उपन्यासों में जीवन दर्शन की विविधताएँ

द्वितीय अध्याय - 'शेखर : एक जीवनी' में जीवन दर्शन

1. प्रस्तावना
2. कृति का सामान्य पर्यालोचन
3. जीवन दृष्टि
4. व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज
5. विद्रोह भावना का प्राबल्य - विद्रोह में सिध्दी का समर्थन
6. प्रेम की नवीन नैतिकता एवं आत्मपीड़ा का चित्रण
7. समसामयिक समस्याओं की अभिव्यक्ति

तृतीय अध्याय - 'नदी के द्वीप' में जीवन दर्शन

1. प्रस्तावना
2. कृति का सामान्य पर्यालोचन
3. जीवन दृष्टि
4. फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव
5. पीड़ा या दु:ख के स्वत:वरण की भावना
6. व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा
7. प्रमुख समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय - "अपने-अपने अजनबी" में जीवन दर्शन

1. प्रस्तावना
2. कृति का सामान्य पर्यालोचन
3. जीवन दृष्टि
4. कालानुभव संबंधी धारणा का स्पष्टीकरण
5. मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या
6. अस्तित्ववाद की स्थापना

पंचम अध्याय - उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

000

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

- प्रा क्क थ न -

किसी साहित्यकार की आंतरिक चेतना सामाजिक वातावरण का अलसायापन, दबी हुई भाव-भावनाएँ तथा गर्विले क्रूर बंधनों में रगड़नेवाली मनुष्य की लाचारी को देखकर अपनी व्याकुलता साहित्य के द्वारा शब्द-बध्द करती है। उसकी इस शब्दबध्दता में नव निर्माण का कुछ संदेश छिपी हुई अवस्था में रहता है। फिर भी साहित्य का उद्देश संदेश देना नहीं है तथापि उसमें नैतिक चेतना भी रह सकती है। आदर्शवादी आलोचक साहित्य को समाज का कल्याणकारी साधन मानते हैं। स.ही. वात्स्यायन का व्यक्तिवादी चिंतक व्यक्ति को ही साहित्य के केंद्र में स्थापित करने में विश्वास रखता है।

स.ही. वात्स्यायन अपने उपन्यास साहित्य में व्यक्तिवादी मूल्यों का प्रबल समर्थन करते हैं। इसी समर्थन में वे फ्रायड के विचारों से प्रभावित हुए हैं। सार्त्र आदि विचारशास्त्रियों के अस्तित्ववाद को भी इसी दृष्टिकोण से स्वीकार करते हैं।

प्रथम अध्याय में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देते हुए उनके चिन्तन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

द्वितीय अध्याय में 'शेखर : एक जीवनी' की सामान्य समीक्षा करते हुए उसमें प्रतिबिम्बित लेखकीय जीवन दृष्टिकोण का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'नदी के द्वीप' का सामान्य परिचय देते हुए उसके वैचारिक पक्ष और जीवन दर्शन के उद्घाटन का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'अपने-अपने अजनबी' की सामान्य समीक्षा करते हुए उसका बुध्दिवाद और जीवन दृष्टि के अध्ययन का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय में 'उपसंहार' में तीनों उपन्यासों में प्रतिबिम्बित जीवन दृष्टिकोण का सारांश प्रस्तुत करते हुए लेखक के चिन्तन का समन्वित रूप प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए जो मेहनत मैं कर सका इसकी प्रेरणा मुझे मेरे निर्देशक आदरणीय डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड जी से मिली। उनके अमूल्य निर्देशन के कारण ही यह कठिन कार्य मैं पूरा कर सका। सही परख, गहराई और संक्षिप्तता उनके निर्देशन का फल है। उनके ऋण से मैं आजीवन मुक्त नहीं हो सकूँगा। उनके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही आदरणीय

DR. BALASAHEB AMBEDKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

डॉ. व्ही.के. मोरे और डॉ. गजानन सुर्वे जी से बड़ी प्रेरणा मिली, यहाँ तक कि आपने समय-समय पर अधिकारपूर्वक मेरा उत्साह बढ़ाया। आप के आशीर्वाद और प्रोत्साहन के बगैर मेरा यह कार्य कुछ असंभव सा ही था।

आदरणीय प्राचार्या सौ.यू.आर. चव्हाण, डॉ. एच्.जी. साळुंखे, डॉ.पी.एस. पाटील, डॉ. के.पी. शहा, प्रा. व्ही.के. पाटील, प्रा. पी.एन. आवटे, प्रा. यू.पी. उगळे, श्री टी.टी. मांडके आदि गुरूजनों के द्वारा समय-समय पर मिलनेवाले परामर्श एवं आशीर्वाद ने मुझे सदैव प्रोत्साहन प्रदान किया है। मुझे प्रेरणा और प्रोत्साहन देनेवाले मित्र श्री एस्.टी. सकटे, प्रा. फडणीस ए.के., प्रा.सौ.एस्. आर. जाधव और सहकारियों को मैं भूल नहीं सकता। उन सबके प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की सफलता में मेरे पिताजी एवं गुरूवर्य प्रा. एस्.टी. घुटुकडे तथा "बापूजी" और माँजी ने मुझे उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित ही नहीं किया बल्कि ममतापूर्ण सहयोग भी दिया है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों का आत्मिक सहयोग एवं हार्दिक प्रेरणा ही मेरे शोध कार्य का आधार है। इनके प्रति और मेरी जीवन संगिनी सौ. प्रेमा के प्रति धन्यवाद प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रबंध लेखन के लिए जिन ग्रंथों का आधार लिया है उन सभी ग्रंथकर्ताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा कर्तव्य है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के साथ-साथ भारती विद्यापीठ, कन्या महाविद्यालय, कडेगाव के ग्रंथपाल प्रा. कु.यू.एस. पाटील, ए.एस.सी. कॉलेज रामानंदनगर के ग्रंथपाल प्रा.आर.बी. गुरव एवं कला वाणिज्य कॉलेज सातारा के ग्रंथपाल प्रा. एल.ए. पाटील के ग्रंथालयों का लाभ मुझे हुआ है।

इस प्रबंध के टंकलेखन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य "ज्योती इलेक्ट्रॉनिक्स टायपिंग सेंटर" कराड के प्रबंधक सुश्री ज्योती नदिडकरजी ने किया। उनके सहकार्य के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

कडेगाव

दिनांक : 30 दिसम्बर, 1993

विनीत

(घुटुकडे डी. एस्.)

000